

— हमारे अतीत - VI —

# आरंभिक नगर

अध्याय - 3

[www.evidyarthi.in](http://www.evidyarthi.in)



# CLASS VI CHAPTER 3 आरंभिक नगर (NCERT)

[www.evidyarthi.in](http://www.evidyarthi.in)

## आरंभिक नगर

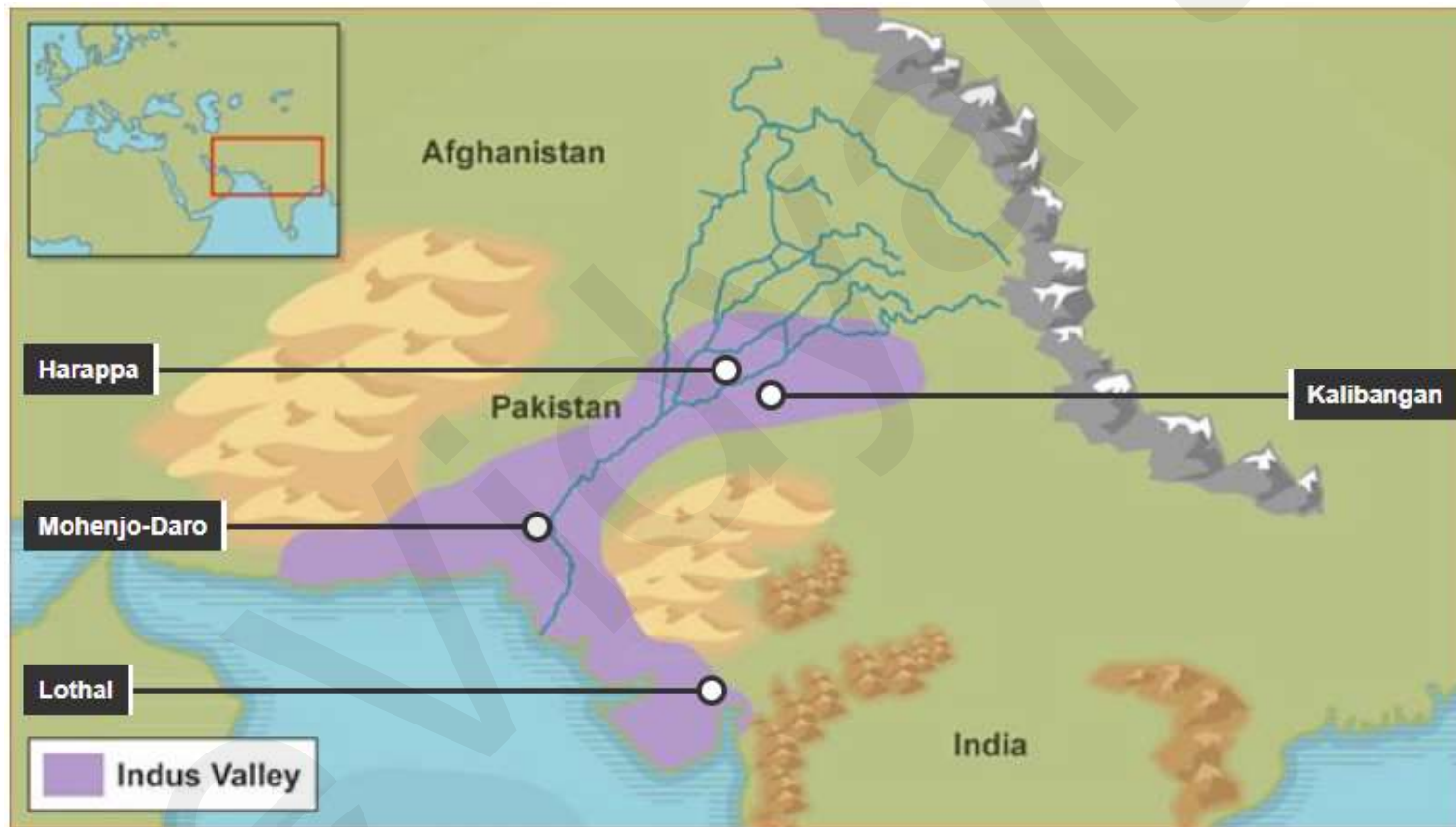
### अध्याय - 3

- हड़प्पा की कहानी
- इन शहरों की क्या विशेषता था?
- मकान, नालियां और गलियां
- नगरीय जीवन
- नगर और नए शिल्प
- कच्चे माल की तलाश में
- शहरों में लोगों के लिए भोजन
- एक नज़दीकी नज़र — गुजरात के हड़प्पा शहर
- अंत का रहस्य

# CLASS VI CHAPTER 3 आरंभिक नगर (NCERT)

## □ हड़प्पा

[www.evidyarthi.in](http://www.evidyarthi.in)



<https://www.evidyarthi.in>

## CLASS VI CHAPTER 3 आरंभिक नगर (NCERT)

[www.evidyarthi.in](http://www.evidyarthi.in)

### □ हड़प्पा

- लगभग 150 साल पहले पंजाब में रेलवे लाइन बिछाई जा रही थी।
- लगभग 80 साल पहले पुरातत्विदों ने इस स्थल को ढूँढ।
- और ये शहर उपमहाद्वीप का सबसे पुराने शहर था।





## CLASS VI CHAPTER 3 आरंभिक नगर (NCERT)

[www.evidyarthi.in](http://www.evidyarthi.in)

- क्यूंकि इस शहर की की खोज सबसे पहले हुई थी इसलिए इसके बाद मिलने वाली इसके आस पास के शहरो को हरप्पा सभ्यता कहा गया।
- इन शहरों का निर्माण लगभग 4700 हुआ था।



## CLASS VI CHAPTER 3 आरंभिक नगर (NCERT)

□ इन शहरों की क्या विशेषता था?

[www.evidyarthi.in](http://www.evidyarthi.in)



<https://www.evidyarthi.in>

## CLASS VI CHAPTER 3 आरंभिक नगर (NCERT)

[www.evidyarthi.in](http://www.evidyarthi.in)

### □ इन शहरों की क्या विशेषता था?

- पश्चिमी भाग - ऊँचा पर छोटा - नगर दुर्ग
- पूर्वी भाग - निचला हिस्सा बड़ा था आकर में - निचला-नगर
- दोनों हिस्सों की चरदिवारियाँ पाकी ईंटों से बनाई जाती थी।





## CLASS VI CHAPTER 3 आरंभिक नगर (NCERT)

[www.evidyarthi.in](http://www.evidyarthi.in)

- मोहनजोदड़ों : खास तालाब – ईंट और प्लास्टर से बना है। तथ प्लास्टर के ऊपर चारकोल की परत चढ़ाई गई है।
- कालीबंगन और लोथल : अग्निकुंड मिले हैं।
- भंडार गृह : लोथल, कालीबंग, और हरपा में।





## CLASS VI CHAPTER 3 आरंभिक नगर (NCERT)

□मकान,  
नालियां और  
गलियां



[www.evidyarthi.in](http://www.evidyarthi.in)

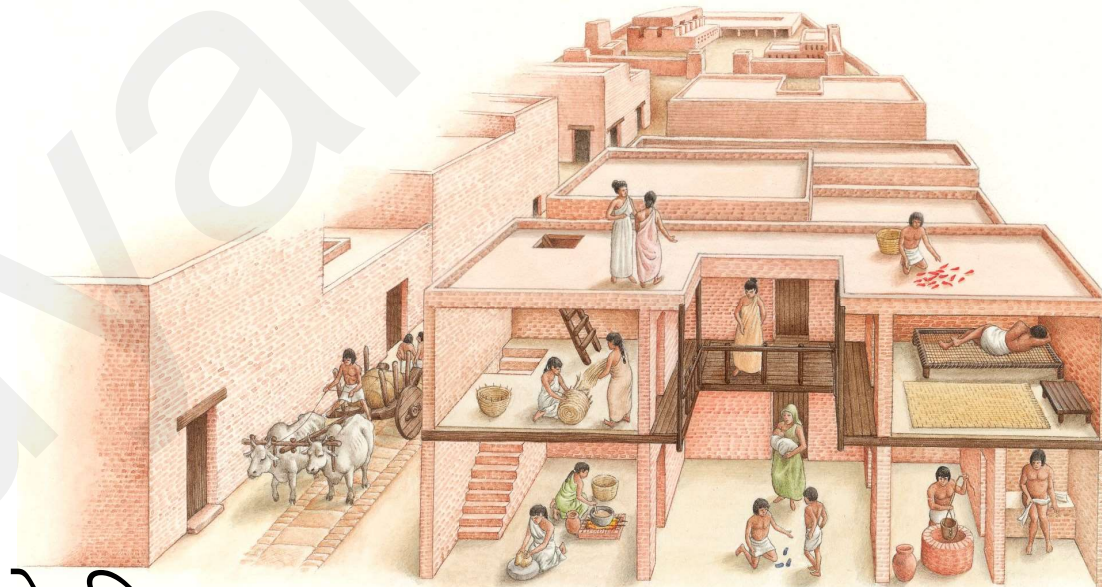
<https://www.evidyarthi.in>

# CLASS VI CHAPTER 3 आरंभिक नगर (NCERT)

[www.evidyarthi.in](http://www.evidyarthi.in)

## □ मकान, नालियाँ और गलियाँ

- एक या दो मंजिला घर
- आंगन के चारों ओर कमरे
- स्नान गृह
- और कुआँ पानी की आपूर्ति के लिए



## CLASS VI CHAPTER 3 आरंभिक नगर (NCERT)

[www.evidyarthi.in](http://www.evidyarthi.in)

- ढके हुए नाले।
- हर नाली में हलकी ढलान होती थी।
- घरों की नालियां सड़को से जुड़ी होती थी और सड़को की नालियों बड़े नालों से।
- ढके नाले मैनहोल के साथ।





# CLASS VI CHAPTER 3 आरंभिक नगर (NCERT)

## □ नगरीय जीवन

[www.evidyarthi.in](http://www.evidyarthi.in)



<https://www.evidyarthi.in>

## CLASS VI CHAPTER 3 आरंभिक नगर (NCERT)

[www.evidyarthi.in](http://www.evidyarthi.in)

### □ नगरीय जीवन

- हड़प्पा के नगरों में बड़ी हलचल रहा करती होगी।
- कुछ लोग नगर की खास इमारतें बनाने की योजना में जुटे रहते थे। जो संभवतः यहाँ के शासक थे।
- लोग दूर दूर से धातु, बहुमूल्य पत्थर, और अन्य उपयोगी चीजे शासक के आदेश पर लाते थे।



## CLASS VI CHAPTER 3 आरंभिक नगर (NCERT)

[www.evidyarthi.in](http://www.evidyarthi.in)

- लिपिक - मुहरों पर लिखते थे।
- शिल्पकार(स्त्री - पुरुष )- अपने घरों या किसी उद्योग संथल पर तरह तरह की चीज़े बनाते थे।





# CLASS VI CHAPTER 3 आरंभिक नगर (NCERT)

## □ नगर और नए शिल्प

[www.evidyarthi.in](http://www.evidyarthi.in)



<https://www.evidyarthi.in>

## CLASS VI CHAPTER 3 आरंभिक नगर (NCERT)

[www.evidyarthi.in](http://www.evidyarthi.in)

### □ नगर और नए शिल्प

- पुरातत्त्वविदों को जो चीजें वहाँ मिली हैं, उनमें अधिकतर पत्थर, शंख, ताँबे, काँसे, सोने और चाँदी जैसी धातुओं से बनाई गई थीं।
- ताँबे और काँसे - औजार, हथियार, गहने और बर्तन बनाए जाते थे।
- सोने और चाँदी से गहने और बर्तन बनाए जाते थे।



## CLASS VI CHAPTER 3 आरंभिक नगर (NCERT)

[www.evidyarthi.in](http://www.evidyarthi.in)

- सबसे आकर्षक वस्तुओं में मनके, बाट और फलक हैं।
- आयताकार पत्थर की मुहरों पर सामान्यतः जानवरों के चित्र मिलते हैं।
- हड़प्पा सभ्यता के लोग काले रंग से डिजाइन किए हुए खूबसूरत लाल मिट्टी के बर्तन बनाते थे।





## CLASS VI CHAPTER 3 आरंभिक नगर (NCERT)

➤ कपडे का इस्तेमाल



[www.evidyarthi.in](http://www.evidyarthi.in)

## CLASS VI CHAPTER 3 आरंभिक नगर (NCERT)

[www.evidyarthi.in](http://www.evidyarthi.in)

### ➤ कपड़े का इस्तेमाल

- संभवतः 7000 साल पहले मेहरगढ़ में कपास की खेती होती थी।
- मोहनजोदड़ो से कपड़े के टुकड़ों के अवशेष चाँदी के एक फूलदान के ढक्कन तथा कुछ अन्य ताँबे की वस्तुओं से चिपके हुए मिले हैं।
- पकी मिट्टी तथा फ़ेयँन्स से बनी तकलियाँ सूत कताई का संकेत देती हैं।



# CLASS VI CHAPTER 3 आरंभिक नगर (NCERT)

[www.evidyarthi.in](http://www.evidyarthi.in)

## फ़ेयॉन्स

पत्थर और शंख प्राकृतिक तौर पर पाए जाते हैं, लेकिन फ़ेयॉन्स को कृत्रिम रूप से तैयार किया जाता है। बालू या स्फ़टिक पत्थरों के चूर्ण को गोंद में मिलाकर उनसे वस्तुएँ बनाई जाती थीं। उसके बाद उन वस्तुओं पर एक चिकनी परत चढ़ाई जाती थी। इस चिकनी परत के रंग प्रायः नीले या हल्के समुद्री हरे होते थे।

फ़ेयॉन्स से मनके, चूड़ियाँ, बाले और छोटे बर्तन बनाए जाते थे।





## CLASS VI CHAPTER 3 आरंभिक नगर (NCERT)

[www.evidyarthi.in](http://www.evidyarthi.in)

### □ कच्चे माल की खोज में

- हड़प्पा में लोगों को कई चीजें वहीं मिलती थीं, लेकिन ताँबा, लोहा, सोना, चाँदी और बहुमूल्य पत्थरों जैसे पदार्थों का वे दूर-दूर से आयात करते थे।



## CLASS VI CHAPTER 3 आरंभिक नगर (NCERT)

[www.evidyarthi.in](http://www.evidyarthi.in)

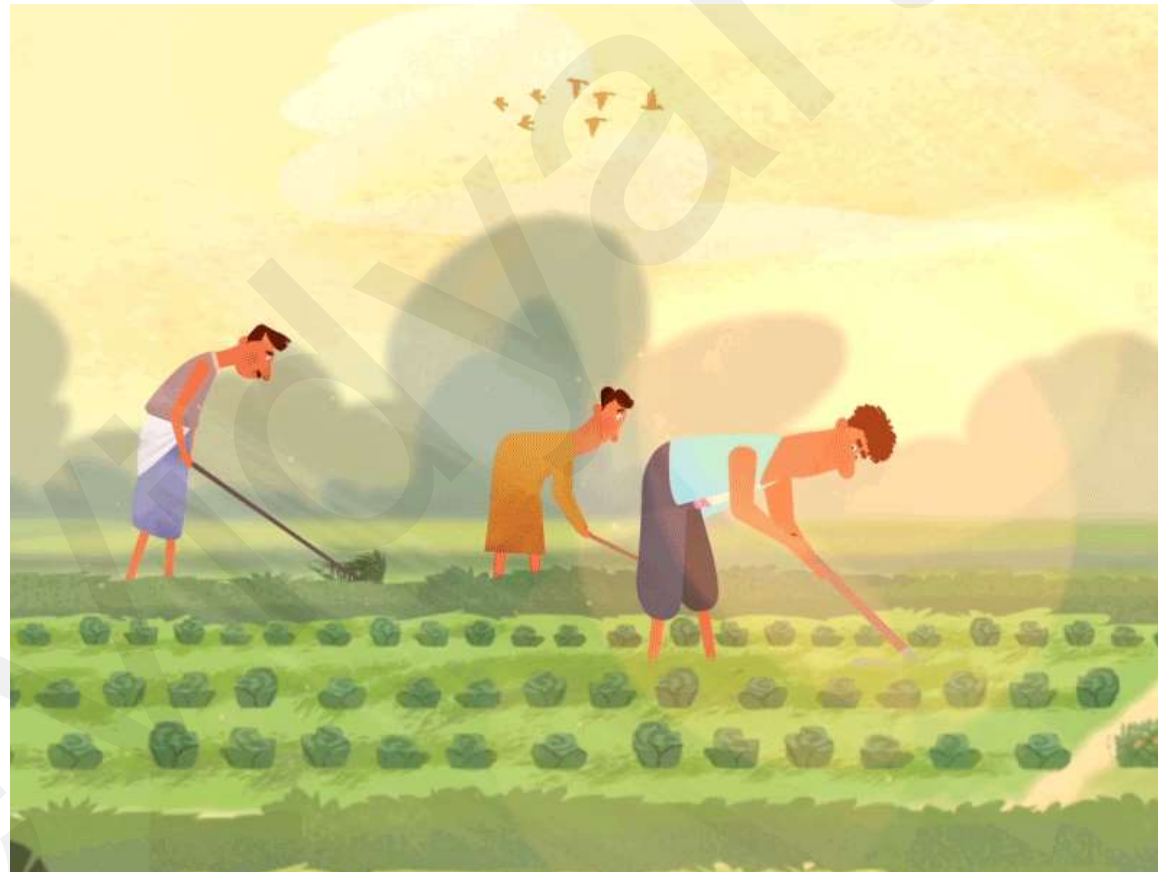
- आज के राजस्थान और ओमान से तांबा।
- टिन (कांस्य बनाने के लिए तांबे के साथ मिश्रित) - अफगानिस्तान और ईरान।
- कर्नाटक से सोना
- गुजरात, ईरान और अफगानिस्तान से कीमती पत्थर।



## CLASS VI CHAPTER 3 आरंभिक नगर (NCERT)

### □ नगरों में रहने वालों के लिए भोजन

[www.evidyarthi.in](http://www.evidyarthi.in)



<https://www.evidyarthi.in>



## CLASS VI CHAPTER 3 आरंभिक नगर (NCERT)

[www.evidyarthi.in](http://www.evidyarthi.in)

### □ नगरों में रहने वालों के लिए भोजन

- किसान और चरवाहे ही शहरों में रहने वाले शासकों, लेखकों और दस्तकारों को खाने के सामान देते थे।
- पौधों के अवशेषों से पता चलता है कि हड़प्पा के लोग गेहूँ, जौ, दालें, मटर, धान, तिल और सरसों उगाते थे।



## CLASS VI CHAPTER 3 आरंभिक नगर (NCERT)

[www.evidyarthi.in](http://www.evidyarthi.in)

- जमीन की जुताई के लिए हल का प्रयोग एक नई बात थी।
  - ✓ हड़प्पा काल के हल तो नहीं बच पाए हैं, क्योंकि वे प्रायः लकड़ी से बनाए जाते थे, लेकिन हल के आकार के खिलौने मिले हैं।



## CLASS VI CHAPTER 3 आरंभिक नगर (NCERT)

[www.evidyarthi.in](http://www.evidyarthi.in)

- इस क्षेत्र में बारिश कम होती है, इसलिए सिचाई के लिए लोगों ने कुछ तरीके अपनाए होंगे।
  - ✓ संभवतः पानी का संचय किया जाता होगा और जरूरत पड़ने पर उससे फ़सलों की सिचाई की जाती होगी।





## CLASS VI CHAPTER 3 आरंभिक नगर (NCERT)

[www.evidyarthi.in](http://www.evidyarthi.in)

- हड़प्पा के लोग गाय, भैंस, भेड़ और बकरियाँ पालते थे।
- बस्तियों के आस-पास तालाब और चारागाह होते थे।
- लेकिन सूखे महीनों में मवेशियों के झुंडों को चारा-पानी की तलाश में दूर-दूर तक ले जाया जाता था।
- वे बेर जैसे फलों को ईकठा करते थे, मछलियाँ पकड़ते थे, और हिरण जैसे जानवरों का शिकार भी करते थे।



## CLASS VI CHAPTER 3 आरंभिक नगर (NCERT)

### □ गुजरात में हड़प्पाकालीन नगर का सूक्ष्म-निरीक्षण

[www.evidyarthi.in](http://www.evidyarthi.in)



## CLASS VI CHAPTER 3 आरंभिक नगर (NCERT)

### ➤ धौलावीरा

[www.evidyarthi.in](http://www.evidyarthi.in)

- कच्छ के इलाके में खदिर बेत के किनारे धौलावीरा नगर बसा था। वहाँ साफ़ पानी मिलता था और जमीन उपजाऊ थी।
- धौलावीरा नगर को तीन भागों में बाँटा गया था।
- इसके हर हिस्से के चारों ओर पत्थर की ऊँची-ऊँची दीवार बनाई गई थी। इसके अंदर जाने के लिए बड़े-बड़े प्रवेश-द्वार थे।





## CLASS VI CHAPTER 3 आरंभिक नगर (NCERT)

[www.evidyarthi.in](http://www.evidyarthi.in)

- इस नगर में एक खुला मैदान भी था, जहाँ सार्वजनिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते थे।
- यहाँ मिले कुछ अवशेषों में हड़प्पा लिपि के बड़े बड़े अक्षरों को पत्थरों में खुदा पाया गया है।
- इन अभिलेखों को संभवतः लकड़ी में जड़ा गया था। यह एक अनोखा अवशेष है।



## CLASS VI CHAPTER 3 आरंभिक नगर (NCERT)

### ➤ लोथल

[www.evidyarthi.in](http://www.evidyarthi.in)

- गुजरात की खम्भात की खाड़ी में मिलने वाली साबरमती की एक उपनदी के किनारे बसा लोथल नगर ऐसे स्थान पर बसा था, जहाँ कीमती पत्थर जैसा कच्चा माल आसानी से मिल जाता था।
- यह पत्थरों, शंखों और धातुओं से बनाई गई चीजों का एक महत्वपूर्ण केंद्र था।



## CLASS VI CHAPTER 3 आरंभिक नगर (NCERT)

[www.evidyarthi.in](http://www.evidyarthi.in)

- इस नगर में एक भंडार गृह भी था। इस भंडार गृह से कई मुहरें और मुद्रांकन या मुहरबंदी (गीली मिट्टी पर दबाने से बनी उनकी छाप) मिले हैं।
- यहाँ पर एक इमारत मिली है, जहाँ संभवतः मनके बनाने का काम होता था। पत्थर के टुकड़े, अधबने मनके, मनके बनाने वाले उपकरण और तैयार मनके भी यहाँ मिले हैं।



## CLASS VI CHAPTER 3 आरंभिक नगर (NCERT)

### □ सभ्यता के अंत का रहस्य

[www.evidyarthi.in](http://www.evidyarthi.in)



<https://www.evidyarthi.in>



## CLASS VI CHAPTER 3 आरंभिक नगर (NCERT)

### □ सभ्यता के अंत का रहस्य

[www.evidyarthi.in](http://www.evidyarthi.in)

- नदियाँ सूख गई
- जंगलों का विनाश
- प्राकृतिक आपदा जैसे बाढ़
- शासकों का नियंत्रण समाप्त
- नई और छोटी बस्तियों में जाकर बस गए।

